विषय-सूची

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय

1. हिंदी मीडिया का उद्भव और विकास 6-13

1.1 जनसंचार माध्यमों का परिचय
1.2 जनसंचार माध्यम का स्वरूप
1.3 मीडिया के कार्य
1.4 हिंदी मीडिया की विकास यात्रा

द्वितीय अध्याय

2. मुद्रीत पत्रकारिता और हिंदी 15-21

2.1 हिंदी और दैनिक समाचार-पत्र
2.2 हिंदी संचार के प्रमुख माध्यम
2.3 मुद्रीत माध्यम एंव भाषा का अंतरसंबंध
2.4 भाषा और संस्कृति का संबंध

तृतीय अध्याय

3. **इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी 23-69**

3.1 रेडियो की भाषा का स्वरूप
3.2 रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों की शैली
3.3 आकाशवाणी द्वारा प्रसारित समाचारों में प्रयुक्त हिंदी का विश्लेषण
3.4 टेलीविज़न की भाषा का स्वरूप

चतुर्थ अध्याय

4. .वर्तमान समाचार पत्रों में हिंदी 47-69

राष्ट्रीय अख़बार

4.1 नवभारत

4.2 जनसत्ता

स्थानीय संस्करण

4.3 दैनिक भास्कर

4.4 लोकमत

निष्कर्ष 71-72

संदर्भ ग्रंथसूचि 73

प्रस्तावना

समाज और भाषा अपने अतीत से ही एक दूसरे पर निर्भर है जिसका मुख्य कारण संचार है। और, संचार माध्यम ही मीडिया है। समाज के संगठनात्मक के ढाँचे की नीव मीडिया ने रखी है। एक-एक व्यक्ति को समाज संसाधन को जोड़ने का काम मीडिया का होता है और उसमें सूचनाओं का आदान-प्रदान करना भाषा के माध्यम से संभव हुआ हैं। इस शोध परियोजना में मीडिया में हिंदी भाषा का स्वरूप कैसे बदल रहा हैं यह जानने का प्रयास मात्र है। संचार की सदियों से अनवरत यात्रा, आज ऐसे शिखर पर है, जहां उसने न केवल मानव जाति को अपनी भावनाओं को उद्भाषित करने की शक्ति प्रदान की, अपितु उसे नित-नवीन संचार साधनों से समृद्ध भी किया। ध्वनि ज्ञान से सफल संचार संप्रेषण के पश्चात जब मनुष्य का लिपि ज्ञान अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा , तो पत्रकारिता का जन्म हुआ। आज यही पत्र विश्व में सर्वाधिक प्रभावशाली संप्रेषण के माध्यम बन चुके हैं। नव संचार माध्यमों ने संचार की दुनिया में एक क्रांति उपस्थित कर दी है। नई प्रौद्योगिकी के साथ भाषा में भी बदलाव दिखायी दे रहा है। विशेष रुप से हिंदी भाषा का स्वरुप बदला है। हिंदी भाषा के क्षेत्र में विस्तार हुआ है वर्तमान युग में जो भाषा प्रौद्योगिकी के साथ नहीं चलेगी उसका विकास भी नहीं होगा। परिणामस्वरुप वह भाषा तो पिछड़ेगी ही उसका समाज भी पिछड़ जायेगा। कुछ लोगों का मानना है कि एक दशक पहले के जनसंचार माध्यमों की हिंदी कठिन और दुरुह थी। वहीं जब हिंदी भाषा को सरल-सहज करने का प्रयास किया गया तो सुनने को मिला कि हमारी हिंदी दूसरी भाषाओं की गोद में जा बैठी है पर शायद समस्या सिर्फ हिंदी भाषा के प्रयोग की नहीं उसकी पहुंच की भी है। हिंदी भाषा का जो स्वरुप आज हमारे सामने है उसके निर्माण में तकरीबन एक हजार साल लगे हैं। और हम दावे के साथ यह कहने की स्थिति में अब भी नहीं है कि यह स्वरुप आखिरी है या कि स्थिर है या इसमें परिवर्तन की गुंजाइश एकदम खत्म हो चुकी है। यों तोहिंदी के कुछ रुप पालि में ही मिलने लगते हैं लेकिन भाषा वैज्ञानिक हिंदी भाषा की वास्तविक शुरुआत एक हजार इस्वी से मानते हैं। अपने प्रारम्भिक काल में थोड़े बहुत अंतरों के साथ हिंदी अपभ्रंश के बहुत करीब थी और उसमें उन्हीं स्वरों और व्यंजनों का प्रयोग होता था जो अपभ्रंश में प्रयुक्त होते थें। शब्द समूह भी प्रायः अप्रभंश के ही थे। लेकिन भक्ति आन्दोलन को प्रारम्भ के साथ तत्सम शब्दों का वृद्धि हुई और मुसलमानों के आगमन के साथ पश्चात, फारसी तथा तुर्की भाषाओं से कुछ शब्द हिंदी में आये। 1500 ई0 के बाद हिंदी ने अपभ्रंश से पल्ला झाड़ लिया और व्याकरण के क्षेत्र में अपने पैरों पर खड़ी हो गयी। वाक्य-रचना फारसी से प्रभावित होने लगी और फारसी , तुर्की तथा अरबी भाषाओं से करीब 6 हजार शब्द हिंदी में आये।

हिंदी के विकास का यह मध्यकाल था जिसे पार करने के बाद यह भाषा तेजी से अंग्रेजी के प्रभाव में आई। न केवल ध्वनिया तथा विराम चिन्हों पर अंग्रेजी का असर पड़ा बल्कि वाक्य-रचना , मुहावरे तथा लोकोक्तियों भी प्रभावित हुई। आधुनिक काल में हिंदी भाषा के विकास पर यदि हम गौर करें तो पायेंगे कि सन् 1850 के बाद हिंदी के शब्द-समूह तेजी से बदले हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम पाँच दशकों में अंग्रेजी के शब्द तो तेजी से आये ही , कुछ पुराने तद्भव शब्द निकल भी गये।

सन् 1900 के बाद द्विवेदी युग तथा छायावादी युग में तत्सम शब्दों का प्रयोग बढ़ा जबकि प्रगतिवादी आंदोलन में तद्भव शब्दों का। वर्तमान समय में बोल-चाल के तथा लोक-प्रचलित शब्दों के प्रयोग के प्रति रुझान बढ़ रहा है।

किसी भी भाषा की जीवंतता की सबसे बड़ी शर्त है उसकी परिवर्तनशीलता। लगातार स्वरुप परिवर्तन के बावजूद अपनी आत्मा को सुरक्षित रखने का सामर्थ्य हिंदी में है। हिंदी ने दूसरी भाषाओं के शब्द लिये , आदिकाल से चलते आ रहे शब्दों के स्वरुप बदले और अपनी बोलियों , उप बोलियों से अपने भण्डार भरे। आजादी के समय की हिंदी अंग्रेजी से प्रभावित थी । हिंदी को 1953 में राजभाषा के रुप में स्वीकार किया गया। 1984 से 1992 तक दूरदर्शन एवं 1992 से 1995 तक केबिल टीवी के कारण संक्रमण काल रहा। 1992 के बाद आने वाले हिंदी के विभिन्न निजी चैनलों ने अपने को द्रुतगामी बनानेके लिए प्रतियोगिता को गलाकाट प्रतिस्पर्धा बना दिया।

परिणामस्वरुप हिंदी पुनः भौतिकवादी से प्रभावित हुई। वैश्वीकरण की दौड़ में सूचना क्रांति ने ऊँची छलांग लगाकर पूरे विश्व को एक गांव बना दिया है। बाजारीकरण ने इसमें विकास के नाम पर धन लेकर सिर्फ तकनीकी विकास ही नहीं किया अपितु भाषा संस्कृति का भी विकास कर वैश्विक स्तर पर एक नवीन भाषा को जन्म दिया। निजी चैनल पर विदेशी पूंजी के अधिग्रहण करने से संस्कृति एवं भाषा भी अधिग्रहीत हो गयी। परिणामस्वरुप आज जो भाषा विभिन्न चैनलों के माध्यम से देखने-सुनने को मिल रही है , उसे किसी एक भाषा का नाम देना उचित नही होगा। साथ ही साथ विदेशी पूंजी भूमण्डलीकरण ने प्रिंट मीडिया को भी अपनी गिरफ्त में ले लिया है। परिणामस्वरुप हिंदी के समाचार पत्रों ने भी नये आयाम प्रस्तुत करने की ओढ़ लिया है। और हिंदी भाषा के समाचार पत्रों की हिंदी भी प्रभावित हो गयी है। साथ ही इलेक्ट्रानिक मीडिया ने पिछले एक दशक में नव आयाम के नाम पर भाषा- अपसंस्कृति का जो स्वरुप जनमानस के समक्ष रखा है , वह आवश्यकता है हिंदी के ऐसे मानक स्वरुप की जिसका प्रयोग आम जन मानस आसानी से कर सके। यह बात सच है कि दूसरी भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने से भाषा समृद्ध होती है परन्तु उन शब्दों को लेते समय इस बात का ध्यान रखना होगा की हिंदी भाषा की गरिमा बनी रहे । आज की मीडिया में हिंदी भाषा को एक नया रूप दिया हैं , जिस पर शोधकार्य करने का मैने लघु प्रयास किया हैं ।

प्रथम अध्याय

1. हिंदी मीडिया का उद्भव और विकास

1.1 जनसंचार माध्यमों का परिचय

1.2 जनसंचार माध्यम का स्वरूप

1.3 मीडिया के कार्य

1.4 हिंदी मीडिया की विकास यात्रा